सखी प्राची–चलौ उद्धव जी! हम तुम्हारे ब्रहम कू मान लिंगी पर फिर तौ हमें कृष्ण कन्हैया मिल जायेंगे।
उद्धवजी–अरे फिर तुम श्याम सुन्दर के गीतन नै गावे लगीं।

सखी प्रार्थना–अजी उद्धव जी हम तौ जि कह रही हैं कि तुमनै श्याम सुन्दर कू अच्छी तरह नाए देखौ। श्यामसुन्दर कू हमारी ऑखिन सौ देख लेते तौ तुमहू जोग भोग सबै भूल जाते।

उद्धवजी–

वे तुमतें नहीं दूरि ज्ञान की ऑखिन देखौ,
अखिल विश्व भरपूरी रूप सब उन्हीं विसेखौं,
लोह दार पाषाण में जल थल मही आकाश,
सचर अचर बरदत सबै ज्योति ब्रहम प्रकाश,
सुनौ ब्रजनागरी, सुनौ ब्रजनागरी, सुनौ ब्रजनागरी, सुनौ ब्रजनागरी।

सखी प्रियंका–

कौन ब्रहम कौ ज्योति ज्ञान कासौ कहें उधौ,
हमरे सुन्दर श्याम प्रेम कौ मार्ग सूधौ,
नैन वैन श्रुति नासिका मोहन रूप दिखायी,
सुधि बुधि सब मुरली हरी प्रेम ठगोरी लाई।
सखा सुन श्याम के, सखा सुन श्याम के, सखा सुन श्याम के,।

सखी सपना–पर एक बात हमें सांची सांची बताओ, तुमकू कौन नै भेजौ है। तुम श्यामसुन्दर की कह रहे हौ हमें यापे विश्वास नाए है रहयौ है। हमें तौ लग रहयौ है बीसों बीसे तुमकू कुबजा ने भेजो है कुबजा नै।

हमने जबसे सुनयौ है सौत कूबरी नाम,
याही सौ भई कूबरी का सूझौ घनश्याम।
कोउ कहे रे मधुप श्याम जोगी तुम चेला,
कुबजा तीरथ जाय कियौ इन्द्रिन कौ मेला,
मधुवन सुध ही विसार कै आये गोकुल माही,
इत सब प्रेमी बसत हैं तुम्हरौ ग्राहक नाहीं,
सखा सुन श्याम के, सखा सुन श्याम के, सखा सुन श्याम के।

उद्धवजी–अरी गोपियो तुम तौ बड़ी बेतुकी बात कर रही हौ, कूबरी कौ कहा लेनौ देनौ। सांची मानौ मोकू श्याम सुन्दर नै ही भेजौ है।

सरगुण सवै उपाधि रूप निर्गुण लै उनकौ,
निराकार निरलेप लगत नहीं तीनों गुण कौ,
हाथ पाय नहीं नासिका नैन वैन नहीं कान,
अच्युत ज्योति प्रकाश का सकल विश्व के प्राण।
सुनौ ब्रजनागरी, सुनौ ब्रजनागरी।